अपनी कब्र खोदने वाले

अश्विनी कुमार पंकज

'साला सबका मइया-बहिनिया एक कर के रख देंगे। का बूझता है? दरोगा नथुनी सिंह को भेंड़ा बना देगा। अरे हम एक-एक को जानते हैं। चुपचाप से कल सुबह तक थाने में जिसका-जिसका लोग मरा है, आ के हाजिरी दो। नहीं तो फिर मत बोलना कि दरोगा जी टाइम नहीं दिये।'

इतना कहने के बाद दारोगा नथुनी सिंह चुप हो कर खाट पर बैठ गया। इसी बीच बूटन महतो चाय ले आया था। दारोगा नथुनी सिंह ने अंगुलियों से गिलास के किनारे को साफ किया और चाय पीने लगा। कौन बनेगा करोड़पति में जिस तरह से अमिताभ बच्चन के सवाल पूछने के बाद दिल धड़काने वाली खामोशी शुरू हो जाती है, कुछ वैसी ही खामोशी नथुनी सिंह के डायलॉग के बाद वहां छा गयी थी। गांव के लोग मातमी चेहरा बनाये खाट से दूरी बना कर खड़े थे। पीपल पेड़ की छांह में पुलिस की जीप जीभ लपलपा रही थी। जीप की अगली सीट पर ड्राईवर सूअर की तरह पसरा हुआ था जबकि दो सिपाही सामने के दरवाजे से झांक रही औरत को एकटक घूरे जा रहे थे।

'हजूर, हमिन कर गांव से हुंवा कोनो नइ रहलो।' बासठ वर्षीय बूटन महतो ने दारोगा को चाय की मिठास में घुला जान कर तुरंत हाथ जोड़ा। 'आपको कउनो गलत खबर दिया है हजूर!'

चाय मीठी थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि नथुनी सिंह का पुलिसिया मिजाज बदल जाए। बूटन महतो की बात सुन कर दारोगा मुस्कुराने लगा।

'चमड़ी उखाड़ के सुखा देंगे इहे रउद में। अरे बूटन, नाउन से पेट काहे छुपाता है। हम कोनो दुसमन हैं का। एक-एक घर-गांव का चूत्तर और चेहरा का खबर रखते हैं कि कौन किधर खाता है और कौन किधर हगता है।'

'हम अपन ई छोटका नतिया का किरिया खाते हैं हजूर!' बूटन सिंह ने दारोगा का संदेह दूर करने के लिए तुरंत अपने नाती के सिर पर हाथ रख दिया।

नथुनी सिंह बच्चे के सिर पर हाथ देख कर चुप हो गया। उसने बाकी की चाय जल्दी-जल्दी खत्म की और उठ कर खड़ा हो गया। भीड़ पर भूखे बाघ की तरह निगाह डाली। बस बूढ़े और बच्चे ही थे, दो-चार नौजवानों को छोड़ कर।

'उमर का लिहाज कर रहा हूं बूटन महतो। अगर तुमलोगों की किरिया-सौगंध से थाना-कचहरी चलने लगे, तो नथुनी सिंह दारोगा की नौकरी गई ही समझो। मुझे खूब पता है कि अवैध खनन के दौरान मरने वाले सातों लोग इसी गांव के हैं। बूढ़-पुरनिया अदमी हो। मूर्ख मत बनो। कल सुबह सब मृतकों के परिवार से एक-एक झन को ले कर थाने आ जाना।'

भीड़ के बीच वरदी और कड़क मूंछों की आतंकी छवि को छोड़ कर वह जीप की ओर बढ़ चला। हाथ जोड़े बूटन और पूरी भीड़ उसके पीछे-पीछे। जब तक जीप उनकी नजरों से ओझल नहीं हो गई, सब लोग वैसे ही हाथ जोड़े झुके-झुके खड़े रहे।

जब उनकी आंखें जीप की अनुपस्थिति से निश्चिंत हो गई और भीड़ अपने-अपने घरों की ओर मुड़ने को हुई, तभी बूटन महतो ने नाती को अपनी छाती से चिपका लिया। उसकी ललाट को चूमा और भोंकार मार कर रो पड़ा। भीड़ के पांव थम गये। समूची भीड़ बेआवाज थी। अलबत्ता कुछ घरों से सिसकियां सुनाई देने लगी थीं।

छः-सात साल के नाती को कुछ समझ में नहीं आया कि नाना को क्या हो गया है। वह भी रोने लगा।

दो दिन पहले कोयलांचल के एक कोलियरी क्षेत्र में हुए एक हादसे में सात लोगों की मौत हो गई थी। यह हादसा

तब हुआ, जब एक बंद हो चुकी (अबेन्डेड) ओपेन कास्ट कोयला खदान में कुछ लोग चोरी-छुपे अवैध ढंग से कोयला निकाल रहे थे। अखबार में छपी खबर के मुताबिक अवैध ा खनन के दौरान अचानक खान धंस गयी और उसमें दब कर सात ग्रामीणों की मौत हो गई। अनुमान है कि अन्य तीन लोग गंभीर रूप से तथा लगभग पंद्रह लोग इस हादसे में घायल हुए हैं। मरने वाले आसपास के गांवों के थे। मौके से हालांकि पुलिस को तीन ही लोगों की लाश मिली है, जिनमें दो औरतें हैं। खबर में यह भी कहा गया है कि अभी तक उन लाशों पर किसी ने दावा नहीं किया है। आसपास के गांवों के लोगों के अनुसार वे उनमें से किसी को भी नहीं जानते। घायलों का भी कोई सुराग नहीं लग पाया है।

'पार्टी को तुरंत इस पर कोई एक्शन लेना चाहिए।' कोयलांचल माले पार्टी के दफ्तर में इसी घटना पर बात करते हुए जिला समिति के सदस्य मोती ओहदार ने अपनी रायजाहिर की।

चाय का घूंट भरते हुए पार्टी सचिव ने हां में सर हिलायी।

'देखिए, ई स्साला जीएमवा का बयान दिया है' कहते हुए मोती ओहदार ने 'सुबह-समाचार' का तीन नंबर पृष्ठ उनके आगे खोल दिया।

पार्टी सचिव अखबार देखने लगे। अखबार में हादसे की खबर प्रमुखता से छपी थी। अखबार ने लिखा था - 'कोयला खदान के जीएम ने दावा किया है कि कंपनी का इस हादसे से कोई लेना-देना नहीं है। अवैध कोयला खनन रोकने की जिम्मेवारी स्थानीय पुलिस और प्रशासन की है। कंपनी ने तो नियमानुसार उस खान को कब का बंद कर दिया है तथा पूरे इलाके में किसी के भी प्रवेश पर पाबंदी है।'

'उ इलाके का साथी लोग को बुलाकर तुरंत बैठक कीजिए।' समाचार पढ़ने के बाद पार्टी सचिव ने लगभग निर्णायक शब्दों में अपनी बात कही। 'कोशिश हो कि शाम तक ही कोई प्रदर्शनात्मक कार्यक्रम बन जाए।'

'सही बोलते हैं साथी। पूरा कोयलांचल जिंदा मरघट बन गया है।' मोती ओहदार का स्वर गुस्से से लबरेज था। 'देखिए न, कोयलांचल का धनबाद, रामगढ़, हजारीबाग जिला में इस तरह का घटना बराबरे होते रहता है। कभी एक, कभी तीन, कभी पांच-सात, तो कभी बीसियों लोग अवैध खनन का चलते मउवत का सिकार होते हैं। पर न तो कंपनी कभी ध्यान देती है और न सरकारे।'

'विस्थापित लोग के पास इसके अलावा कोनो चारा नहीं रह गया है मोती जी।' पार्टी सचिव ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा। 'आखिर का करेगा गरीब आदमी। खेत-जमीन तो रहा नहीं। इधर जेतना बंद खदान है, कोल कंपनियां जिनको अबेन्डेड माइंस कहती हैं, इहे सब कोयला परियोजनाओं से विस्थापित और प्रभावित आदिवासी-दलित कमजोर-पिछड़ा लोग का जीने का आखिरी और एकमात्र सहारा रह गया है। खदान जीवन और मौत दोनों ही देती हैं, लेकिन हर हादसे के दो-चार दिन बाद फिर से वही क्रम शुरू हो जाता है।'

मोती ओहदार चुपचाप पार्टी सचिव को सुन रहे थे। उनको अच्छी तरह से मालूम था कि मरने वाले सभी सात लोग बूटन महतो के गांव सरियाडीह के निवासी थे। हालांकि उनकी पहचान आधिकारिक तौर पर अभी तक नहीं हो पायी है। गांव वाले हर मौत के बाद मृतकों की पहचान ऐसे ही छुपा लेते हैं, क्योंकि व्यक्ति को खो देने के बाद, उसकी पहचान बता कर कानूनी प्रताड़ना लेने की आर्थिक हिम्मत किसी में नहीं होती।

'हां साथी। जिंदगी तो खाली पेट नहीं चलता है न पर इ हरामी दरोगवा नथुनी सिंह एक नंबरी घाघ है। सुने कि सरियाडीह जा के सबको धमका आया है।' सचिव की बात पूरी होते ही मोती ने कहा।

'उसका काम ही नोचना है। पुलिस का नजर से बेचारे गांववालों का बचना मुसकिल है। एकदम गिद्ध की नजर होती है उनकी। बिना भारी चढ़ावा चढ़ाये मृतकों का अंतिम संस्कार करना वह भी बिना रोये दुनिया को बिना बताये, आज तक कोई कर पाया है।'

'कइसा जिंदगी है संवाग का मरने पर घर-परिवार रो भी नहीं सकता।' मोती ने जैसे आह भरी।

'यह सब तो लड़ाई का हिस्सा है। हम सबको जनता से सीखना है। वही सिखाती है भयानक से भयानक विपत्ति में भी रास्ता निकालना खैर, आप तो तुरंत मिटिंग का तैयार में लग जाइए। और हां सरियाडीह और आसपास का घटना पर पूरा नजर रखिए।'

तीसरे दिन की रात को भी सरियाडीह के अधिकांश घरों में चूल्हे नहीं जले थे। बच्चों को गुड़-चूड़ा या चना-चबेना दे कर चुप करा दिया गया था। जब रात गांव पर पूरी तरह से उतर आयी बूटन महतो के बड़े आंगन में पूरा गांव जुटा।

बूटन महतो ने मुंह में भर आये पानी को थूक कर गले को खखारा। फिर रूंधे गले से बोलना शुरू किया - 'इ तो जीवन का बिधान है। जो जनम लिया है, मरेगा। अफसोस का बात है कि कोनो बेस मउवत हमलोग का हिसा में नहीं लिखा है। नथुनी सिंह बहुते कांई है। उ कउनो को नइ छोड़ेगा। इसलिए बेस इहे होगा कि जेतना जवान लोग है फजिर होने से पहिले ही गांव छोड़ दे। जिसको जहां ठिकाना मिले कुछो दिन के लिए जा के हुँवासमा जाए।'

किनारे बैठी महिलाओं में से किसी की सिसकी तेज हो गई।

'खबरदार! जो कोनो रोया। अरे जाने वाला चला गया। जो बचा है उसको अपना रुलाई से काहे मारने पर तुली हो।' बूटन बनावटी गुस्सा करते बोला। 'हमरा भी जवान बेटा मरा है। है एको लोर मेरा आंख में। बोलो?'

'लेकिन बूटन... भंडराओली का का करें। उसका गौना को अभी साल भर भी नहीं हुआ है। रह-रह कर फिट हो जा रही है। ऊपर से सुनते हैं कि सात महीना का पेटो है।' घूरन गंझू ने अपनी समस्या सामने रखी।

'सांति से काम लेना होगा हो घूरन सांति से।' बूटन ने जैसे सबको मूलमंत्र दिया। 'बिपत का घड़ी है। अब जो कपार में लिखा है उसे तो भुगतना ही पड़ेगा।'

इसी बीच औरतों के झुंड में खुसर-पुसर शुरू हो गई थी। दो दिनों से भूखी मां की छाती में दूध का एक भी कतरा नहीं पा कर कोई बच्चा रोने लगा। मां ने चुप कराने की कोशिश की। लेकिन बच्चे की रुलाई नहीं रुकी। मां ने बेबस हो कर बच्चे को तड़-तड़ दो-चार थप्पड़ जड़ दिये। अब बच्चा चीख-चीख कर रोने लगा। दूसरी औरतों ने अपनी-अपनी सिसकियों पर काबू पाते हुए तुरंत मां का हाथ पकड़ लिया। बच्चे की मां भी रोने लगी।

शोरगुल और रुलाई बढ़ते देख एक बुजुर्ग चिल्लाया - 'हम कहइत हलियउ कि जनीमन के मिटिन में मत बोलाव। अब सुनइत रह इनकर घांव-घिचिर। जनी लोग का कोनो दिमाके नहीं है।'

बच्चे के बाप को लगा उसकी औरत भरी जमात में उसकी इज्जत उतार देगी। वह लगभग लतियाने वाले अंदाज में बैठे-बैठे ही चीखा - 'चुप रहेगी कि नहीं। आएं का?'

बूटन को हस्तक्षेप करना पड़ा। 'सुनो-सुनो। सब सांत हो जाओ। ई बखत जादा बात-बिचार का नहीं है। बस जवान लोग फजिरे-फजिर गांव छोड़ दें। जनी लोग अपना काबू में रहें। लड़ने-झगड़ने से काम बिगड़ जाएगा। बाकी सब हम पे छोड़ो आप लोग। हम सम्हाल लेंगे।'

मीटिंग खत्म हो गई।

सुबह सूरज निकलने के पहले ही अंधेरे में गांव के सभी किशोर, जवान और अधेड़ लोग जाने कहां गायब हो गए। दारोगा नथुनी सिंह के आदेशानुसार दूसरे दिन थाने पहुंचने के लिए गांव में कोई नहीं बचा था।

इधर अखबारों में लगातार छप रही खबरों और हादसे के दिन से ही इसके विरोध में माले पार्टी द्वारा किये गये जीटी रोड के चक्का जाम से घबरा कर स्थानीय विधायक रणविजय चौधरी, जो कि राज्य सरकार में मंत्री भी था, ने जिला पुलिस अधीक्षक को बुला कर क्लास ले ली। सख्त हिदायत दी कि जाम को तुरंत तुड़वाया जाए और दो-चार लोगों को पकड़ कर मामले को शांत किया जाए। माले वालों ने इस हादसे के लिए कोल माफिया और अवैध खनन के सरगना यमुना चौधरी को जिम्मेदार ठहराते हुए मुकदमा दर्ज करने तथा गिरफ्तारी की मांग की थी। यमुना चौधरी मंत्री का बाप था। इलाके में अक्सर लोग चुटकी लेते हुए कहते थे, 'रणविजय अवैध खनन की काली कमाई की पैदाइश है।' इसीलिए मंत्रीजी ने यह भी हिदायत दी कि मीडिया वालों को मैनेज कर इस हादसे में उनके पिता के नाम को आने से रोका जाए।

उसी दिन दोपहर के तीन बजे के आसपास पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस ने लाठियां भांज कर और आंसू गैस के गोले छोड़ कर जाम तुड़वा दिया। जाम कर रहे माले कार्यकर्ताओं और स्थानीय जनता की जम कर धुनाई हुई, जबकि रात के सात-आठ बजे सरियाडीह के बगल के गांव बनियाटांड़ के सत्रह लोगों को नथुनी सिंह ने गिरफ्तार कर लिया। ये सभी सत्रह लोग माले पार्टी के समर्थक थे और अपने आंदोलनों से कोल माफिया तथा नथुनी सिंह की आंख की किरकिरी बने हुए थे। इनकी गिरफ्तारी का कारण रजिस्टर में दर्ज किया गया - 'अवैध खनन में संलिप्तता तथा तारीख को हुई खनन दुर्घटना में भागीदारी।'

अगले दिन प्रेसवालों और इलेक्ट्रोनिक मीडिया को संबोधित करते हुए जिला पुलिस अधीक्षक ने कहा, 'हादसे के जिम्मेदार लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पूछताछ चल रही है। उम्मीद है कि पुलिस जल्दी ही हादसे के जिम्मेदार कुछ और बचे अपराधियों को पकड़ लेगी। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए पुलिस ने इलाके में गश्त बढ़ा दी है।'

रात के आठ बजते ही बनियाटांड़ थाने से छः राईफलधारी सिपाहियों के साथ नथुनी सिंह निकला और जीप में सवार हो गया। जीप थाने के अहाते से बाहर जीटी रोड पर दौड़ने लगी। जीप सरियाडीह से पहले के एक गांव - कटकमसांडी पहुंच कर धीमी हो गयी। कटकमसांडी सड़क के किनारे ही बसा है। चालीस-पचास घरों की यह बस्ती महतो लोगों की है। जीटी रोड होने से सड़क किनारे जिनकी जमीन थी, उसमें से कुछ लोगों ने छोटी-मोटी दुकानें खोल ली हैं। दो ढाबा, तीन पान की गुमटियां और पांच-छः छोटी-छोटी किराना की। एक ढाबे पर जा कर जीप रुक गई। सभी राईफलधारी जीप से उतरे और चारपाइयों पर लेट गये। चारपाइयों से शराब तथा मीट-मछली की मिलीजुली गंध आ रही थी।

जीप नथुनी सिंह को ले कर गांव के अंदर प्रवेश कर गई। एक गली के आखिरी मोड़ पर पहुंच कर खड़ी हो गई। सड़क की अपेक्षा गांव के अंदर आधी रात का सन्नाटा पसरा हुआ था। नथुनी सिंह ने एक दरवाजे को ठकठकाया। थोड़ी देर बाद एक तीस वर्षीय औरत ने दरवाजा खोला। नथुनी सिंह मुस्कराने लगा।

'रमचंदरवा कहां है?'

'जी उ तो सो रहे हैं।' औरत ने उसी मुस्कुराहट से जवाब दिया।

'उठाओ साले को'। कहते-कहते नथुनी सिंह अंदर घुस आया। जोर से बोला, 'का रे रमचंदर सो गया का रे साला, उठ।'

नथुनी सिंह की दहाड़ सुन कर एक लिकलिक सा आदमी आंखें मसलते हुए कमरे से बाहर निकला।

'परनाम हजूर! एतना रात में खबर भिजवा दिये होते हमही हाजिर हो जाते हजूर के दरबार में।'

रामचंदर गंझू एक मामूली चोर था। वह जीटी रोड पर खड़े होने वाले ट्रकों पर हाथ मारा करता था। अक्सर उसके हाथ कुछ खास नहीं लगता था, लेकिन कभी-कभार बढ़िया माल भी उसके हत्थे चढ़ जाया करता था। इस चोरी का एक भाग उसे ईमानदारी से थानेदार की सेवा में अर्पित करना पड़ता था। थानेदार को भी इस कमाई से ऊपर के अधिकारियों और स्थानीय सांसद तथा विधायक को हर महीने एक सुनिश्चित रकम भेंट करनी होती थी। पर जब से नथुनी सिंह बनियाटांड़ थाने में आया है, चोरी के माल के साथ-साथ उसकी औरत में भी बिना नागा हिस्सा लेने लगा है। वह समझ गया आज पूरी रात ढाबे की चारपाई पर गुजारनी होगी।

'का खेयाल रखते हो तुम मेरा। घर में कुछो पान-वान भी नहीं होगा। अइसा करो रमचंदर, ड्राईवर के साथ जाके रोड पर से बढ़िया पान बंधवा लाओ।'

जिस बिस्तर पर रामचंदर अपनी पत्नी के साथ थोड़ी देर पहले सोया था, अब उस पर नथुनी सिंह ने अपनी टांगें पसार ली थीं।

'हां-हां, हजूर आप इतमीनान से चाह-चूह पीजिए। हम अभिये लेके आते हैं पान।' कहते हुए तीर की गति से रामचंदर जीप में जा कर सवार हो गया। जीप ने यू टर्न लिया और रामचंदर को धचके देते सड़क की ओर चली गयी।

रामचंदर की औरत ने दरवाजा बंद कर लिया। कमरे में आते ही नथुनी सिंह ने उसे अपनी बांहों में दबोच लिया।

'साला इ एकपसलिया तुमरा देह नासे न कर रहा है। देखो तो कइसा भभक रहा है सभे कुछ। हमरा जइसा अदमी ही ई गरमी को सांत कर सकता है। है कि नहीं?'

नथुनी सिंह की पकड़ में छटपटाती रामचंदर की औरत कुछ नहीं बोल पायी। नथुनी सिंह उसे बिस्तर पर पटक कर सवार हो गया। नथुनी सिंह पूरे जोश से गश्त पर था।

गश्त का पहला राउंड खत्म होने पर नथुनी सिंह ने जेब से क्वार्टर साइज की बोतल निकाल ली। औरत गिलास और पानी ले आयी।

'का रे पता है कौन-कौन लोग मरे हैं ?' समय चाहे कैसा भी हो नथुनी सिंह अपनी ड्यूटी कभी नहीं भूलता।

'किसका बात कर रहे हैं दरोगा जी।' औरत अनजान बनते हुए बोली।

'साली हमीं को चराती है' नथुनी सिंह ने उसे अपने बगल में खींच लिया। 'अरे वही लोग चार-पांच दिन पहले धंस कर मरगये हैं।'

'अच्छा सरियाडीह वालों की बात कर रहे हैं हजूर।' दांत काटे अंगों को सहलाते हुए उसने तुरंत जवाब दिया।

'हां-हां, उहे और कौन?

'एक तो सुनते हैं कि बूटन का बेटा। दूसरा घुरनवा का मंझिला छोंड़वा। तीसरा।' रामचंदर की औरत ने एक के बाद एक सातों की शिनाख्त कर डाली।

नथुनी सिंह हर एक का नाम अपने दिमाग में घूंट के साथ-साथ ही नोट करता रहा। गिलास खत्म होते ही फिर से चढ़ गया। होठों को चूसने से पहले प्यार से बोला - 'तुम तो बहुते काम की चीज हो रानी।'

गश्त फिर से शुरू हो गयी। अभी रात पूरी बाकी थी।

हादसे के बाद जांच और मुआवजे की मांग कर रहे माले कार्यकर्ताओं पर हुए बर्बर पुलिसिया कार्रवाई ने इलाके को तपती हुई भट्ठी बना दिया। कुछ एनजीओ और मानवाधिकार संगठन भी हरकत में आ गए थे। सरियाडीह और आसपास के गांवों में अचानक चहल-पहल बढ़ गयी थी और तरह-तरह के गाड़ियों से भिन्न-भिन्न पेशे के लोग लगातार मंडराने लगे थे।

माले पार्टी के दफ्तर का भी कुछ ऐसा ही माहौल था। अभी इस वक्त भी वहां एक मानवाधिकार एक्टिविस्ट जो कि दिल्ली से आया था, पार्टी सचिव से घटना और इसके इतिहास से जुड़ी जानकारी ले रहा था।

'यहां के लोगों के अनुसार इस क्षेत्रो की जमीन पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार में थी, जिसे बाद में भारतीय रेलवे ने ले लिया। पुनः इसे सीसीएल ने पट्टे पर लेकर कोयला निकासी के लिए ओपेन कास्ट माइनिंग शुरू किया। सीसीएल की जमीन पर आज 35 गांव बसे हैं, जिनमें कोपा, गांधी नगर, प्रेम नगर, जोगतियाबाद, सात नम्बर अमला टांड़, कमलजोड़ा, गुरकिया, पहाड़ीडीह, सेन्टर पीट, हेटलर सात, बनियाटांड़, एकदोनी कला, सरियाडीह, बेहरवा टांड़, खण्डिया, बैलटांड़, कोगड़ी आदि हैं। ये सभी वर्षों से उजड़ते बसते रहे हैं। सीसीएल द्वारा अधिग्रहण के पहले गिरिडीह इलाके में मानसून पर आधारित एक औसत खुशहाल खेती हमेशा होती थी। परन्तु खदानों के खुलने के बाद खेती पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। पारम्परिक आर्थिक आधार नष्ट होने लगे और आर्थिक संसाधनों के लिए खदानों पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से

निर्भर होते चले गए।'

'हूं....' बार-बार पसीना पोछते हुए एक्टिविस्ट महोदय ने हामी भरी। 'बहुत दर्दनाक कहानी है। इसका मतलब यह हुआ कि खदान से विस्थापित हुए ये लोग लगभग तीन पीढ़ियों से यहां रह रहे हैं और इनमें ज्यादा जनसंख्या दलितों की है।'

'हां। लेकिन कुछ आबादी मुसलमानों की भी है। पहले लोग खेती-किसानी करते थे पर जबसे खदान खुला .... अब पूरापूरी या आंशिक रूप से सिर्फ उसी पर निर्भर हैं। सरकार और कंपनी ने यहां बसे 100 में से 90 लोगों के रोजगार के भविष्य की चिंता किये बिना खदानों कों बंद कर दिया। आजीविका और विकास की कोई योजना नहीं बनायी गयी। ऊपर से खनन को अवैध घोषित कर दिया गया। आप ही बताइए आखिर लोग कैसे जिएंगे?' पार्टी सचिव ने दमदार तरीके से अपनी बात रखी थी।

तभी एक ग्रामीण ने ऑफिस में प्रवेश किया और सचिव को 'सलाम' कहते हुए सामने पड़ी बेंच पर बैठ गया।

सचिव ने ग्रामीण का परिचय कराते हुए अपनी बात जारी रखी।

'ये हैं जनार्दन गंझु। कसियाडीह के हैं। इनका सब जमीन-खेत खदान में चला गया। बंद पड़ी खदान से कोयला निकाल कर बेचते हैं.... तब जाके कहीं परिवार चलता है।'

एक्टिविस्ट महोदय ने तुरंत अपना कैमरा निकाला और उसके दो-तीन फोटो खींच डाले। फोटो खींचते हुए उसके दिमाग में आने से पहले पढ़ी गयी रिपोर्ट की पंक्तियां चमकने लगी थी। रिपोर्ट में उसने पढ़ा था कि आजादी के बाद और कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के बाद विस्थापित हुए अनेक गांव के लोगों को जमीन तो मिली मगर ऐसी जगह जहां पानी, बिजली, तालाब, सड़कें, अस्पताल या स्कूल - कुछ भी नहीं था। इस बीच उन्होंने अपने पूजास्थल, कब्रिस्तान, अपना धर्म, और अपनी भाषा ही नहीं, बल्कि अपना इतिहास और अतीत तक खो दिया। अपने पूजास्थलों के बिना वे त्योहार नहीं मना सकते थे। कब्रिस्तान न होने की स्थिति में शवों को पिछवाड़े दफना देने या जला देने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। विस्थापित होने वालों को एक एकड़ जमीन के लिए मुश्किल से कुछ हजार रुपए का मुआवजा मिला और ये भी सिर्फ पुरुषों के हाथों में गया, जिन्होंने उसे शराब में उड़ा दिया था।

'आप शराब पीते हैं?' एक्टिविस्ट ने ग्रामीण से सवाल किया।

'अरे नइ साहब। खाने का पइसा ही नइ जुटता है। सराब कहां से पिएंगे।'

'तो आपको कुछ मुआवजा या नौकरी नहीं मिला?'

'सरकार वादा तो की थी कि हर घर से कोनो एक अदमी को जरूर नौकरी मिलेगा. ...मगर हमलोग आज भी इंतजार में ही हैं। सब बाहर का लोग आके भर गया है कोयला खदान में।'

पार्टी सचिव बीच में ही रोकते हुए बोले, 'राजमहल, परेज आदि कोयला खदानों से विस्थापित हुए दलित-आदिवासियों की स्थिति तो और भी बदतर है। वे आज भी पुनर्वास की उम्मीद में हैं। उनकी जमीन के नीचे छिपा 'काला हीरा' उनके लिए अभिशाप बन गया। अब बचे हुए जंगल और खेत कोयले की धूल से अंटते जा रहे हैं और औरतों को पानी लाने के लिए 8-10 मील तक पैदल चलनापड़ता है।'

'थोड़ा 'रैट होल' के बारे में बताइए . ...मैं उसे देखना भी चाहूंगा।' डायरी में नोट करते हुए एक्टिविस्ट ने मासूमियत से अपनी जिज्ञासा जाहिर की।

'रोजगार के संकट के कारण लोगों ने बंद पड़ी खदानों में छोटे-छोटे स्तर पर कुआं खोदकर खनन शुरू कर दिया। इसी को 'रैट होल' कहते हैं। इस तरह के खनन में छोटे ठेकेदार अथवा स्थानीय लोगों का एक समूह शामिल होता है। आज सिर्फ कोपा गांव के निकट की सीसीएल की बंद पड़ी खदानों की भदुआ पहाड़ी में 50, बुढ़िया खदान में 40, पत्थरडीहा में 45, अमाटांड में 50 और 16 नम्बर पीट में 60 ऐसी कुआं खदानें चल रही हैं। एक ठेकेदार अथवा 15 से 35 तक की संख्या का एक समूह एक खदान कुआं खोदकर कोयला निकासी करता है। इस खदान से निकाले गये एक टोकरी कोयले की कीमत 10 रुपये है। इसमें आधा पैसा ठेकेदार रखता है और आधा पैसा मजदूर को मिलता है।'

'उ भी बराबर समय पर नइ मिलता है। बहुत दौड़ाता है ठेकेदार।' जनार्दन गंझू बोला।

'.....अच्छा, एक मजदूर दिनभर में कितना टोकरी कोयला निकाल लेता है?' एक्टिविस्ट ने पूछा।

'यही कोई 10 टोकरी। का हो जनार्दन जी?' सचिव महोदय ने जवाब देते हुए कहा। 'देखिए, एक कुआं खदान पर काम करने वाले मजदूरों की संख्या औसतन 20 होती है। इस तरह देखा जाए, तो गिरिडीह इलाके में चल रही लगभग 250 कुआं खदानों में 5000 से भी अधिक लोग इस धंधे से सीधे जुड़े हैं। इन लोगों के साथ-साथ कोयला को बोरों में रखने, बोरों को साइकिल पर लादने, कोयला को घर तक लाने, उसे पोड़ा (पक्का कोयला) बनाने और फिर उसे गिरिडीह के बाजार में बेचने तक में एक परिवार के लगभग सभी सदस्य, यहां तक कि बच्चे भी शामिल होते हैं।'

'वेरी इंटरेस्टिंग'। पहलू बदलते हुए एक्टिविस्ट ने अपनी आंखें फाड़ ली थीं। 'आप कह रहे हैं कि कोयले के इस पूरे बाजार में कई तरह के लोग शामिल हैं। निकासी से

ले कर दूर-दराज के बाजारों में कोयला बेचने एवं खरीदने वाले हजारों लोगों की एक पूरी श्रृंखला है जिनका जीवन इन कुआं खदानों पर निर्भर है। माइ गॉड! ..... पर क्या इससे इतनी कमाई हो जाती है कि ये अपने बच्चों एवं परिवारों को एक अच्छा जीवन या एक अच्छा भविष्य दे सकें?

'अरे, नइ साहब। कमाई में ढेरे हिस्सेदार हैं .....जैसे-सीसीएल का छोटा-बड़ा अधिकारी, सिकरूटी गार्ड, पुलिस, गुंडा-बदमास और सराब का दुकान वाला .... इन सबका।' जवाब जनार्दन गंझु ने दिया था।

एक्टिविस्ट आश्चर्य से बोला 'लेकिन मैंने सुना है कि विस्थापितों को अलग कॉलोनी देकर बसाया गया है।'

सचिव और जनार्दन दोनों के ही चेहरों पर एक साथ व्यंग्यात्मक मुस्कान उभर आयी। 'आप उसे कॉलोनी कहते हैं? जहां न अच्छी सड़कें हैं न ही पीने का पानी। बिजली, स्कूल और अस्पताल की तो बात ही दूर है। आलम यह है कि आज तक इनके पास आवासीय प्रमाण-पत्र भी नहीं है। जबकि इन लोगों के द्वारा सीसीएल को इसका रेवेन्यू तक भुगतान किया जा रहा है। आवासीय प्रमाण-पत्र नहीं रहने से जाति प्रमाण-पत्र नहीं बन रहा है। इससे स्कूल-कॉलेजों में दाखिला नहीं मिल पा रहा है इनके बच्चों को। नौकरियों के लिए आवेदन देना मुश्किल है जबकि मतदाता सूची में इन सभी का नाम दर्ज है। कुछ समझे कि नहीं?'

एक्टिविस्ट ने सहानुभूति में सिर हिलाया।

जनार्दन गंझू एक्टिविस्ट की नोटबुक में उभरते अक्षरों को कुछ पल देखता रहा। फिर धीरे से बोला, 'हमलोग को तो अब कोनो आस नइ है। सभे तरफ अंधारे-अंधारदिखता है।'

'जानते हैं, सबसे दुखद और अमानवीय क्या है इस तरह के प्रसंग में .....?'

'क्या?' एक्टिविस्ट लिखते-लिखते रुक गया।

सचिव ने जनार्दन गंझु के जर्द चेहरे को देखते हुए कहा, 'भीषण शोषण, बेरोजगारी, गरीबी, बदहाली, अशिक्षा, प्रदूषण के अलावा सबसे दुखद पहलू यह है कि इन खदानों में खनन करते समय किसी तरह की दुर्घटना अथवा मौत हो जाने पर इन्हें मुंह बंद रखना पड़ता है। मृतक मजदूर की लाश को चुपचाप दफना दिया जाता है और इसकी भनक भी किसी को नहीं लगने दी जाती है। वरना मृतक के परिवार और साथ में काम करने वालों को कानूनी सजा भुगतनी पड़ती है।'

इसके दो दिन बाद जब पार्टी सचिव और मानवाधिकार एक्टिविस्टों का एक दल सरियाडीह पहुंचा। लेकिन गांव वाले बात करने की स्थिति में नहीं थे। उनके वहां पहुंचने के ठीक एकाध घंटा पहले ही भंडरा वाली के सात माह का गर्भ लगातार की बेहोशी और अत्यधिक तनाव से गिर गया था। लड़का था। पूरे गांव को जैसे खुल कर रोने की छूट मिल गयी। सप्ताह भर से सीने के भीतर थमी-घुटी सिसकियां बाहर आ कर फूट पड़ीं और गांव की समवेत रुलाई वातावरण को चीर रही थी।

बूटन महतो ने बचे हुए मर्दो को समझाया, 'देखो, ऊपरवाला जो भी करता है बेसे करता है। इहे मरल बच्चा सबका अंतिम संस्कार पूरा करवाएगा। इसके कफन-दफन का इंतजाम करो।'

गांव वाले तुरंत अपने-अपने मृतकों के अंतिम संस्कार की तैयारी में जुट गए। स्थिति की नजाकत को देखते हुए मानवाधिकार एक्टिविस्टों का दल बिना कुछ पूछताछ और जानकारी लिये वापस लौट गया।

उनके जाने के बाद शाम के करीब पांच बजे के आसपास सभी गांव वाले मृतक बच्चे पर आठ कफन डाल कर गांव के आखिरी छोर पर स्थित श्मशान पहुंचे।

नथुनी सिंह को इसकी खबर मिल गयी थी। उसने तुरंत राईफलधारी पुलिस पार्टी को तैयार होने को कहा। रामचंदर की औरत से उसे हालांकि सभी मृतकों के नाम मालूम हो गये थे और उसने कल के दिन छापा मारने का प्लान बनाया था, लेकिन यह मौका अत्यंत उपयुक्त था। सभी एक ही जगह बिना हिल-हुज्जत के धरे जा सकते थे। मुंहमांगा पैसा काटने का यह सबसे बेहतर अवसर था।

जब नथुनी सिंह दारोगा सदल-बल मौके पर पहुंचा, तो बच्चे को गड्ढे में डाला जा चुका था। मिट्टी देने की तैयारी हो रही थी। सिपाही जीप से कूद-कूद कर चारों ओर फैल गये। निरीह गांव वालों की ओर राईफलें ऐसे तनी हुई थीं, मानो उग्रवादियों का कोई दस्ता मुठभेड़ के लिए सामने खड़ा हो। यह अलग बात है कि उनका नाम सुनते ही चरबी से बेडौल हो चुके अंगों और भारी-भरकम तोंदों वाले इन सिपाहियों की फटने लगती थी।

नथुनी सिंह लपक कर सीधे बूटन महतो के पास पहुंचा। एक जोरदार लात लगाते हुए वह जोर से गरजा।

'साला ... चोट्टा लोग .... केतना समझाए थे ....आज सबको अंदर कर देंगे। ... पकड़ो सालों को।'

कब्र में बच्चे का शव नंगा पड़ा था। बूटन ने दारोगा के पांव पकड़ लिए।

सरियाडीह गांव में भंडरा वाली की चीखें थम ही नहीं रही थीं।

'कइसे जीयब रे ..एगे मइया ... हे देवी माता..आखरी आसराओ छीन लेले रे ..!

• •

जोहार सहिया
फ्लैट नं. 203, एमजी टॉवर,
23, पूर्वी जेल रोड,
रांची-834001 (झारखंड)
मो : 09234301671